

---

# Shri Aghora Ashtakam

श्रीअघोराष्टकम्

## Document Information

---

Text title : Shri Aghora Ashtakam 02 50

File name : aghorAShTakam.itx

Category : shiva, aShTaka

Location : doc\_shiva

Proofread by : Aruna Narayanan

Description/comments : From stotrArNavaH 02-50

Latest update : July 25, 2021

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

July 25, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

# Shri Aghora Ashtakam

## श्रीअघोराष्टकम्



कालाभ्रोत्पलकालगात्रमनलज्जवालोध्वंकिशोर्ज्ज्वलं  
 दंष्ट्राधस्फुटदोषबिम्बमनलज्जवालोग्रनेत्रत्रयम् ।  
 रक्ताकोरकरक्तमाव्यरचितं(रुचिरं)रक्तानुलेपप्रियं  
 वन्देऽभीष्टकृलामयेऽङ्घ्रिकमलेऽघोरास्त्रमन्त्रेश्वरम् ॥ १ ॥

जङ्घालम्बितकिङ्किणीमण्डिगणप्रालम्बिमालाञ्चितं  
 (दक्षान्त्रं)ऽमरुं पिशायमनिशं शूलं य मूलं करैः ।  
 धण्टाभेटकपालशूलकयुतं वामस्थिते बिम्बतं  
 वन्देऽभीष्टकृलामयेऽङ्घ्रिकमलेऽघोरास्त्रमन्त्रेश्वरम् ॥ २ ॥

नागेन्द्रावृतमूर्ध्निज(र्धज) स्थित(श्रुति)गलश्रीडस्तापादाम्बुजं  
 श्रीमद्गोःकटिकुक्षिपार्श्वमम्बितो नागोपवीतावृतम् ।  
 लूतावृश्चिकराजराजितमडाडाराङ्कितोरस्थलं  
 वन्देऽभीष्टकृलामयेऽङ्घ्रिकमलेऽघोरास्त्रमन्त्रेश्वरम् ॥ ३ ॥

धृत्वा पाशुपतास्त्रनाम कृपया यत्कुण्डलि(यत्कृन्तति)प्राणिनां  
 पाशान्ये क्षुरिकास्त्रपाशदलितग्रन्थिं शिवास्त्राह्वयं (?) ।  
 विघ्नाकाङ्क्षिपदं प्रसादनिरतं सर्वापदां तारकं  
 वन्देऽभीष्टकृलामयेऽङ्घ्रिकमलेऽघोरास्त्रमन्त्रेश्वरम् ॥ ४ ॥

घोराघोरतराननं स्फुटदृशं सम्प्रस्फुरन्मूलकं  
 प्राज्यां(जयं)नृत्तसुरूपकं यटयटज्जवालाग्निजेःकयम् ।  
 (जानुभ्यां)प्रयटत्कृता(रिनिकरं)स्त्रगुण्डमालान्वितं  
 वन्देऽभीष्टकृलामयेऽङ्घ्रिकमलेऽघोरास्त्रमन्त्रेश्वरम् ॥ ५ ॥

भक्तानिष्टकदृष्टसर्पदृष्टितप्रध्वंसनोद्योगयुक्  
 उस्ताग्रं कृण्विभद्भुस्तयराणं प्रारब्धयात्रापारम् ।  
 स्वावृत्त्यास्थितभीषणाङ्कनिकरप्रारब्धसौभाग्यकं ?  
 वन्देऽभीष्टकृलामयेऽङ्घ्रिकमलेऽघोरास्त्रमन्त्रेश्वरम् ॥ ६ ॥

यन्मन्त्राक्षरलाञ्छितापघनवन्मर्त्याश्च(अथ) वज्रार्शिषो

भूतप्रेतपिशाचराक्षसकलानिर्घातपाता एव(दिव) ।

उत्सन्नाश्च भवन्ति सर्वदुरितप्रोथ्याटनोत्पादकं

वन्देऽभीष्टकृलामयेऽङ्घ्रिकमलेऽघोरास्त्रमन्त्रेश्वरम् ॥ ७ ॥

यद्दधानो ध्रुवपूरुषो(ध्यानोद्यतपूरुषो)षितगृहग्रामस्थिरास्थायिनो

भूतप्रेतपिशाचराक्षसप्रतिहता निर्घातपाता एव ।

यद्रूपं विधिना स्मरन् छि विजयी शत्रुकथं प्राप्नुते

वन्देऽभीष्टकृलामयेऽङ्घ्रिकमलेऽघोरास्त्रमन्त्रेश्वरम् ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीअघोराष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by Aruna Narayanan

---

—  
*Shri Aghora Ashtakam*

pdf was typeset on July 25, 2021

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

